वीमा नाटक में चित्रित पात्रों का चरित्र चित्रण

- रत्नकुमार सांभरिया

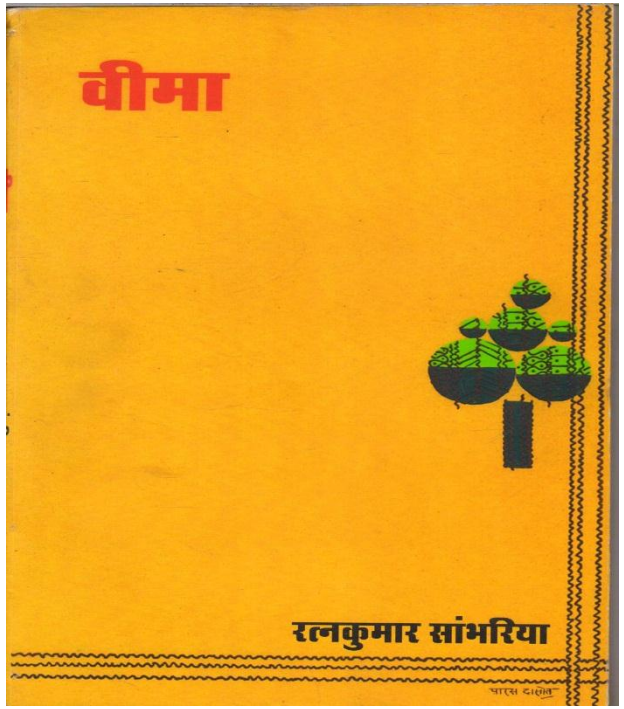

वीमा-

नाटककार रत्नकुमार सांभरिया का 'वीमा' नाटक वीमा नामक नायिका के जीवन को केंद्र में रखकर लिखा गया है। नाटक में वीमा नेत्रहीन है, वह उच्च घराने की लड़की है, जो अपने घर के लोगों से परेशान होकर गाँव छोड़ कर शहर की ओर भाग जाती है। शहर में उसे नेत्रहीन जमन वर्मा नामक लड़के से मुलाकात होती है जो नेत्रहीन सस्था में संगीत शिक्षक के रूप में कार्यरत है। नैत्रहीन संस्था के संस्थापक श्यामाजी की मदद से वीमा और जमन वर्मा की शादी करवा दी जाती है। लेकिन कुछ समय बाद यह बात जब श्यामाजी को पता चलती है कि वीमा उसके रिश्ते में आती है तो श्यामाजी उसका अपहरण करवा लेते हैं । और वीमा का जीवन अपने पति जमन वर्मा के वियोग में बीतने लगता है। नाटक की मुख्य नायिका वीमा पूरे नाटक में अपने जीवन से संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। वीमा आज के समाज और उसकी नियति को केंद्र में रख कर एक बात बहुत सटीक कहती है। वह यह है कि "जो ज्योतिहीन है न उनकी ओर भगवान भी नहीं देखता।" "जिनके साथ वे मेरी शादी करना चाहते थे न, उनकी बीवी की कोख पाट रह गई। दूसरी बीबी होती मैं उनकी....

जमन वर्मा :

नाटक में जमन वर्मा मुख्य नायक के रूप में नजर आता है जमन वर्मा की भूमिका नाटक में एक ऐसे व्यक्तित्व की भूमिका है, जो नेत्रहीन संस्था में एक संगीत शिक्षक के रूप में कार्य करता है। गाँव से भाग कर शहर में आई एक नेत्रहीन लड़की की पुकार सुन कर वह उसकी मदद करता है। परिणामस्वरूप नेत्रहीन संस्था के संस्थापक श्यामाजी उन दोनों का विवाह करवा देते हैं। लेकिन वीमा उनकी रिश्तेदार है यह बात सुनते ही वे दोनों को एक दूसरे से अलग करने की फिराक में लग जाते हैं। ऐसे में जमन वर्मा अपनी पत्नी की तलाश करता है । यहाँ तक कि पत्नी के न मिलने पर वह धैर्यपूर्वक आंदोलन भी करता है। हालाकि आंदोलन के बाद जमन वर्मा को उसकी पत्नी मिल जाती है और वे दोनों आरामपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगते हैं। पूरे नाटक में जमन वर्मा की मानवता और अपनी पत्नी के प्रति प्रेम को दिखाया गया है। नाटक में जमन वर्मा की भूमिका मुख्य पात्र है के रूप में कारगर साबित होती हुई दिखाई देती है। जमीन वर्मा अपने आपको कोसते हुए अपनी पत्नी के लिए नौकरी भी छोड़ने के लिए तैयार हो जाता है और वह कहता है कि “सर मैं नौकरी को तिलांजलि दे सकता हूँ । वीमा मेरी अर्धांगिनी है ।”.... “वीमा से अलग कुछ सुनने को तैयार नहीं हूँ मैं । "5

देवतसिंह :

- नाटक में देवतसिंह अपाहिज है, जिसे मददगार की भूमिका में सामने लाया गया है। यह जमन वर्मा का खास दोस्त है, जो विकलांग होकर भी परिश्रमी और सहयोगी प्रवृत्ति का व्यक्ति है। देवतसिंह की मदद से ही जमन वर्मा की अपहृत पत्नी वापस उसके पास आती है। देवतसिंह यहाँ अंधे की लाठी कहावत को चरित्रार्थ करता हुआ, अपना फर्ज निभाता हुआ दिखाई पड़ता है। वह जमन वर्मा की हर कदम मदद करता है। पूरे नाटक में देवतसिंह का यह संवाद बहुत ही प्रभावशाली दिखाई पड़ता है । एक जगह वह कहता है कि "निःशक्त अपनी पर उतर आ, तो लोहे की गेंद है । लोहे की गेंद को न किक मारी जा सकती है, न उछाला जा सकता है । "6

श्यामाजी :

श्यामाजी नाटक में दिखाए गए नेत्रहीन संस्था के संस्थापक हैं । अच्छी कदकाठी होने के बाद भी नाक की बीमारी से परेशान हैं । नाटक में इनकी भूमिका एक जाति-पांति को महत्ता देने वाले खलनायक के रूप में चित्रित है। जो एक नेत्रहीन संगीत शिक्षक जमन वर्मा और नेत्रहीन लड़की वीमा जो उन्हीं की रिश्तेदार है की शादी करवा देते हैं, लेकिन जब यह पता चलता है कि वीमा उनकी रिश्तेदार है तो उसे उसकी गर्भावस्था में ही अपहरण करवा देते हैं। इसके अलावा जमन वर्मा और वीमा को कई तरह से प्रताड़ित कराते हैं। ताकि वे उनकी रूढ़िवादी सोच को मान जाए। श्यामाजी जमन वर्मा की तनखा में भी इजाफा करने का लालच देकर वीमा को भूल जाने के लिए कहता है । वह कहता है कि "तुम्हारी नौकरी तो बनी रहेगी 500 रु का इजाफा हो जाएगा तुम्हारी तनखा में माहवार | वीमा को भूल जाओ।"7

आका:

- आका निःशक्तों का धनी धोरा और विकलांग लोगों का मसीहा तथा श्यामाजी का पहचान वाला रईस व्यक्ति है। सोने-चांदी के आभूषणों से भरापूरा श्यामाजी खास मित्र है । इसकी ही मदद से श्यामाजी जमन वर्मा की गर्भवती पत्नी व अपनी रिश्तेदार वीमा का अपहरण करवाता है और जमन वर्मा को उसकी पत्नी से मिलने के लिए रुकवाता है । आका अमीर होने के साथ ही साथ काफी बड़े-बड़े लोगों से परिचित भी है। इसका प्रवेश नाटक के बीच और अंत में दिखाया गया है। बीच में इसे अपने कार्यालय में बैठा हुआ और अंत में वीमा को लाते हुए दिखाया गया है।

बुजुर्ग एवं नवयुवक :

नाटक में यह दोनों पात्र वीमा के भाई और पिता की भूमिका में नजर आए हैं। पूरे नाटक में इनका प्रवेश केवल एक ही जगह होता है, वह भी श्यामाजी के दफ्तर में। जहां पर ये दोनों श्यामाजी से वीमा के संदर्भ में बात करते हुए दिखाई देते हैं।

पत्रकार :

पत्रकार सी. सी. झा दैनिक बाज अखबार में कार्यरत है। साथ ही ये देवतसिंह के खास मित्रों में से एक है, जिसने देवतसिंह के साथ मिलकर जमन वर्मा की मदद वीमा को तलाशने के लिए वादा तो करता है, लेकिन श्यामाजी से पैसा खाकर जमन के खिलाफ अपने अखबार में खबर लिख देता है । पत्रकार जमन वर्मा को दिलासा देते हुए कहता है कि “यह तो अमानवीयता की पराकाष्ठा है, लेकिन जमन रोओ मत, अब मैं इन सबको गज की तरह सीधा कर दूंगा । "8

रिक्शा चालक :

नाटक में यह एक ऐसा पात्र है, जो अभी हाल ही में गाँव से आया रहता है। शहर में रोटी-रोजी के लिए रिक्शा को अपना सहारा बनाता है। इसी रिक्शा वाले की मदद से ही जमन वर्मा अपने मित्र देवत सिंह के पास पाए थे।

थानेदार :

- नाटक में थानेदार के माध्यम से भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था को दर्शाया गया है। जो कभी भी सही समय पर अपना कार्य नहीं करती है। उसकी नजर कोई भी गरीब व्यक्ति इस धरती का क्रीड़ा होता है। हां इतना जरूर कहा जा सकता है कि पुलिस वाले अक्सर पूंजीपतियों के तलवे चाटते हुए नजर आते हैं। अक्सर कहावतों में सुना जाती है कि "जिसकी लाठी उसकी भैंस ।" साथ ही यह भी कि " उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।" यह दोनों कहावतें नाटक में भी पुलिस विभाग के कर्मचारियों के लिए सटीक साबित होता दिखाई देता है। पुलिस स्टेशन में जमन वर्मा श्यामाजी के खिलाफ एफ. आई. आर. दर्ज करवाता है, लेकिन दरोगा श्यामाजी पर कोई कार्यवाही न करते हुए जमन वर्मा को ही दोषी और झठा करार दे देता है 1 थानेदार जमन वर्मा और वीमा को कानून की कछ धाराओं को बताकर धमकी देते हुए समझाता है कि "गनाह 420, 120, 375, जमानत नहीं मिलेगी..... ये कम दया है क्या कि तुम दोनों विकलांग हो। अगर सही होते तो अंदर ले जाकर ऐसी पिटाई करता कि ऐ-बे सब भूल जाते स्सालों विकलांग हो या उचक्के । "9

चपरासी :

- नाटक में एक पात्र ऐसा भी है, जो आका के दफ्तर में चपरासी का कार्य करता है । यहु आका के दफ्तर के अंदर चल रही सभी बातों को जमन वर्मा तक पहुँचाने का कार्य करता है । इसके अलावा नाटककार रत्नकुमार सांभरियो ने अपने इुस नाटक में गौण पात्रों का सफल परीक्षण किया है। हालांकि यहाँ पर सभी पात्रों के बारे बता पाना सम्भव नहीं है। इस नाटक के संदर्भ में उदयपुर राजस्थान के वरिष्ठ साहित्यकार डा. राजेन्द्र मोहन भटनागर कहते हैं कि ““वीमा’ नाटक को पढ़ कर ऐसा लगा कि निःशक्तों की पृष्ठभूमि पर इुस रूप में लिखा गया यह नाटक देश का पहला नाटक है । अतः यहाँ पर स्पष्ट है कि वीमा नाटक समाज में घटित समस्याओं से जोड़ कर लिखा गया है । तथा सभी ने उसकी बड़ी सराहना की है। 10

निष्कर्ष

- निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नाटककार रत्नकुमार सांभरिया ने अपने नाटक में आए सभी पात्रों का सही और सुचारू रूप में प्रयोग किया है। वीमा नाटक रंगमंच की दृष्टि से भी एक सार्थक नाटक है। यह नाटक एक दलित और सवर्ण के बीच चल रहे दोहरे मानसिक संघर्ष का प्रतीक है। जिसका शिकार अंधकार की दुनिया से जूझ रहे दो अंधे ज़मन वर्मा और वीमा हो जाते हैं। नाटककार ने जिन सिद्धांतों को ध्यान में रखकर नाटक लिखा है ऐसा प्रतीत होता है कि वह सफलता और सार्थकता की चरम सीमा को छूने में सफल रहा । वीमा नाटक निःशक्त और दलितजन पर आधारित नाटक है। भारतीय समाज में असल जीवन में लाचार लोगों के साथ क्या-क्या घटित होता है, इस बात को नाटककार ने बखूबी प्रस्तुत करने का कार्य किया है। पात्रों के आधार पर सांभरिया जी ने अपने नाटक में संवादों का सही प्रयोग किया है।

धन्यवाद.....!